वार्तालाप–505 कलयमगलनगर (तमिलनाडू) तारिख–31.1.08

Disc.CD-505, dated 31.1.08 at Kalaimagalnagar (Tamilnadu)

0.01–4.36
प्रष्न – एक अजीब बात सुनाना चाहते है। एक तो अमेरिका की तरफ से, दूसरा है आंध्रप्रदेश में करीमनगर की तरफ से। अमेरिका की तरफ से, हर स्टेट मीटिंग में पहले हिंदू प्रीस्ट को बुलाकर वैदिक प्रार्थना कराना शुरू किया है।
बाबा – वैदिक प्रार्थना कराना शुरू किया माना भक्तिमार्ग के तरफ जा रहे है अब।
प्रष्न – और दूसरा है आंध्रप्रदेश में एक मुस्लिम लड़की है करीमनगर से, वो गीता को कंठस्थ करके एवार्डस् जीत रही है।
Time: 00.01-4.36
Student: I want to say about some strange news. The first news is from America and the second one from Karimnagar in Andhra Pradesh. [The news] from America is, in every state, before a meeting they have started to call a Hindu priest and recite the Vedic prayers.
Baba: They have started to recite the Vedic prayers. It means that they are going towards the path of worship now.
Student: And the second news is: in Andhra Pradesh, there is a Muslim girl in Karimnagar who has learnt Gita by heart and is winning awards.

बाबा– अच्छा, उसमें कोई सोल तो प्रवेश नहीं हुई परमधाम से आई हुई? क्या मुस्लिम लड़की में ऊपर से आनेवाली सोल प्रवेश नहीं कर सकती? कर सकती है, तो गीता भी सुना सकती है। रही अमेरिका वालों की बात, जब चारों तरफ से रास्ते बंद हो जाते हैं तो आदमी रास्ता ढूंढ़ता है, आखिर क्या करें? द्वापरयुग में देवतायें बहुत दुखी हो गये, द्वापर के आदि में। देवतायें जब ज्यादा दुखी हो गये तो उन्होंने रास्ता निकाला भक्तिमार्ग का। भगवान ही आसरा होता है। क्रिश्चियनस् मोस्टली तो नास्तिक बनते चले जा रहे हैं अहंकार के कारण, क्रोध के कारण। अब आतंकवादियों ने ऐसा उनको निशाना बनाया हुआ है उन्हें रास्ता नहीं दिखाई पड़ता – क्या करें? इनका जवाब क्या दें? तो भक्ति के तरफ मुड़ गये। कोई बड़ी बात नहीं।
Baba: OK, has a soul, which has come from the Supreme Abode, entered her? Can't a soul that has come from above enter the Muslim girl? It can. So, it can narrate the Gita as well. As regards the people of America, when all the routes become closed, then a person starts searching for a way, finally, what should I do? The deities became very sorrowful in the Copper Age, in the beginning of the Copper Age. When the deities became more sorrowful, then they evolved the path of worship. God is the only support. Christians are mostly becoming atheists because of ego, because of anger. Now the terrorists have targeted them in such a way that they are unable to find a solution. [They think,] What should we do? How should we counter them? So, they turned towards *bhakti*. It is not a big issue.

वेद जिस समय लिखे गये हैं उस समय फिर भी सात्विकता थी शास्त्रों में। उनमें सच्चाई है लेकिन उनका इन्टरप्रिटशन लगातर गलत होता चला गया। इन्टरप्रिटेशन करनेवाले बाद–2 में जो भी आये विद्वान, पंड़ित, आचार्य वो सब विकारी होते गये और विकारों के कारण उनकी व्याख्या गलत हो गई। शास्त्रों का सार और शास्त्रों की सही अर्थ परमात्मा बाप ही आकर के बताता है। वो अभी बता रहा है कि शास्त्रों में जो लिखा हुआ है ब्रह्मा के मुख से वेद निकले। वो वास्तव में कोई पुस्तके नहीं निकल पड़ी। ब्रह्मा के मुख में परमात्मा शिव ही प्रवेश करते हैं और प्रवेश कर के जो कुछ बोलते है वही वेदवाणी है। जिसको हम मुरली कहते है। परंतु उस मुरली के अर्थ को कोई, उसका अर्थ क्या है, उसका निचोड़ क्या है,

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

उसका मतलब क्या है, नई दुनिया कैसी बनेगी, पुरानी दुनिया कैसे विनाश होगी – ये उसका अर्थ कोई लगाए नहीं सकता सिवाए भगवान बाप आकरके उन मुरलियों का जब तक टीचर बनकर के अर्थ ना समझावे और अर्थ समझाने के बावजूद भी जब तक वही भगवान बाप सद्गुरू के रूप में सदगति न करें तब तक सदगति भी किसी की नहीं हो सकती। और सारी दुनिया को आखरीन तो भगवान बाप को पहचानना ही है क्योंकि नम्बरवार स्वर्ग का वर्सा तो सबको मिलेगा। एक जन्म लेनेवाली आत्मा होगी उसको स्वर्ग का वर्सा नहीं मिलेगा क्या? स्वस्थिति का वर्सा नहीं मिलेगा? परमधाम नहीं जायेगी? जायेगी ना। तो जब परमधाम से उतरेगी पहली–पहली बार तो स्वर्ग का अनुभव करेगी। फिर संग के रंग में आकर के फिर तमोप्रधान बनती है आत्मा।

When the Vedas were written, there was some purity in the scriptures. They contain truth, but they have been continuously interpreted in a wrong way. The interpreters who came later on, i.e. the scholars, *pundits*, *acharyas*[1] continued to become vicious and because of vices their interpretation went wrong. Only the Supreme Soul Father comes and tells us the essence of the scriptures and their correct meaning. Now He is telling us that as regards the statement of the scriptures that Vedas emerged from the mouth of Brahma; actually it was not books that emerged from his mouth. The Supreme Soul Shiv enters Brahma's mouth and whatever He speaks after entering is *Vedvani,* which we call Murlis. But the meaning of those Murlis, nobody… what they mean, what their essence is, what it means, how the new world will be established, how the old world will be destroyed; nobody can interpret it until God the Father comes and explains the meaning of those Murlis in the form of a teacher. And despite explaining the meaning, until the same God the Father does not bring the true salvation (*sadgati*) in the form of a Sadguru, nobody can achieve true salvation either. And ultimately the entire world has to recognize God, the Father because everyone will receive the *numberwise*[2] inheritance of heaven. Will a soul which takes just one birth not get the inheritance of heaven? Will it not get the inheritance of self-stage (*swa-sthiti*)? Will it not go to the Supreme Abode? It will go, will it not? So, when it descends from the Supreme Abode for the first time, it will experience heaven. Then after being coloured by the company, the soul becomes impure.

6.40–9.12

प्रश्न– बाबा 18 के बारे में पूरा क्लेरिफिकेशन, 18 नम्बर जो है, 18 का महत्व उसका क्लेरिफिकेशन। एक कैसेट में पूरा क्लेरिफिकेशन नहीं हुआ, बीच में....

बाबा– 9 रत्न माने जाते हैं। 9 रत्न हैं। ऐसे ही अष्टदेव भी माने जाते हैं। उनमें एक नॉन वैल्यूबल है; वो जोड़कर के 9 हो जाते हैं। दोंनो को मिलाकर 18 हो जाते हैं। गीता के भी 18 अध्याय बताए जाते हैं, 18 महारथी हुए महाभारत के। 18 की जो संख्या है वो 8 से जुड़ी हुई है। अष्टदेव और उनकी अष्टदेवियाँ, नवा जो नॉन वैल्यूबल है वो और उसकी सहयोगिनी शक्ति ये टोटल मिलाकर के 18 आत्मायें होती है। ये विलक्षण गिनती हैं। ज्योतिषियों ने इसका लम्बा–चौड़ा रहस्य निकाला है। अव्यक्त वाणी में भी बोला हुआ है– 18 की विशेष महिमा है। यही महाभारी महाभारत युद्ध के 18 महारथी; वो कौरव पक्ष से भी है और पाण्ड़व पक्ष से भी है। दुनिया में धर्मों की संख्या भी 9 है और उन धर्मों के सहयोगी धर्म भी हैं वो भी 18 हो जाते हैं, 18 पुराण हैं।

[1] Teachers

[2] According to their capacity

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Time: 6.40-9.12
Student: Baba, the complete clarification about the number '18'? The number 18, its importance, [can you give] the clarification. In one of the cassettes, the complete clarification was not given, in between…
Baba: 9 gems are considered [important]. There are nine gems. Similarly, eight deities are believed [to exist]. Among them one is non-valuable. Together they become nine. Both of them together are 18. There are said to be eighteen chapters of the Gita. There were 18 *maharathis* (great warriors) in Mahabharata. The number 18 is related to 8. The eight deities (*ashtadev*) and their eight female deities (*ashtadeviyaan*). The ninth one is non-valuable. He and his helper (*sahyogini*) *shakti*; totally they are 18 souls. This is an extraordinary calculation. Astrologers have derived a very big secret out of it. Even in the Avyakta vani it has been said: 18 is especially praised. There are the 18 *maharathis* of the *mahabhari* Mahabharata war. They are from the side of the Kauravas as well as Pandavas. There are nine religions in the world. And there are the helper religions of those religions. They are also 18. There are 18 Puranas.

11.12– 26.43
प्रश्न– मंगल गृह में कोई मनुष्य बैठा हुआ है शायद...
बाबा– एक मनुष्य बैठा हुआ है?
प्रश्न– टी.व्ही. में देखा।
बाबा– वो तो हर एक ग्रह में एक मनुष्य बैठा हुआ है मुखिया बन के। वो जड़ ग्रह है। उस जड़ को चलाने वाला कोई न कोई एक मुखिया तो है एक आत्मा। अकेले मंगल की बात थोड़े ही है। वो सूर्य जड़ है उस जड़ सूर्य का संचालन करनेवाली कोई एक मुख्य आत्मा है जिसे चैतन्य सूर्य कहा जाता है, ज्ञानसूर्य कहा जाता है। ऐसे ही गुरू है, बृहस्पति, वो जड़ है । उसको चलानेवाला कोई चैतन्य है, मुखिया है। अकेले मंगल की बात थोड़े ही है। और, बाबा ने तो यहाँ तक कह दिया कि जितने भी सितारे आसमान में दिखाई पड़ रहे है वो सब है जड़ सितारे आसमान के और तुम बच्चे हो धरती के चैतन्य सितारे। उन एक–2 सितारे के मुखिया, मुख्य रूप से संचालन करनेवाली आत्मा यहाँ बैठी हुई इस सृष्टि पर। ऊपर जो कोई–2 सितारे होते है इकट्ठा गुच्छे के गुच्छे होते है। यहाँ भी धरती के चैतन्य सितारो में कोई ऐसे आत्मायें है जो इकट्ठी होकर के ही रहती है हर जन्मजन्मान्तर, बिखरती ही नहीं। वो आपस में नजदीक रहेगी। न सूर्य की नजदीक जायेंगी न बृहस्पति के नजदीक जायेंगी, न मंगल के नजदीक जायेंगी।
Time: 11.12-26.43
Student: Perhaps there is a human being sitting on the planet Mars.
Baba: One human being is sitting!
Student: I saw it on TV.
Baba: There is one human being sitting on every planet in the form of its chief. They are non-living planets. There is one or the other chief, a soul which operates that non-living (planet). It is not just about Mars alone. That Sun is non-living. There is a chief soul which operates that non-living Sun, which is called the living Sun, the Sun of knowledge. Similarly, there is a non-living *guru Brihaspati*. There is a living soul, a chief who operates it. It is not just about Mars alone. And Baba has said to the extent that all the stars that you see in the sky are non-living stars of the sky and you children are living stars of the Earth. The chief, the soul that mainly operates every star is sitting in this world. There are some stars which form a group above. Even here among the living stars of the Earth, there are souls which live collectively in every birth; they do not scatter at all. They will live close to each other. They will neither go near the Sun nor near the Jupiter nor near the Mars.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

13.33 – 26.42
प्रश्न–...
बाबा– ब्राह्मण परिवार की संख्या कितनी?
प्रश्न– साढ़े चार लाख।
बाबा– हाँ–2 साढ़े चार लाख शरीर सहित और साढ़े चार लाख उनमें जो प्रवेश हैं। वो ब्राह्मण नहीं हैं, ब्रह्मा की औलाद नहीं बनते? 9 लाख संख्या हुई, जो 16 कला सम्पूर्ण देवतायें बनते हैं। उसके पहले वो क्या थे? देवता बनने से पहले वो आत्मायें क्या थी? ब्राह्मण थी। तो 9 लाख 16 हजार 108 ब्राह्मण भी तो यहीं बनते है। हाँ, तो उनके लिए क्या? माउन्ट आबू में..
प्रश्न– माउन्ट आबू में रहते हैं कंचनकाया बनने के लिए।
Student asked something.
Baba: What is the strength of the Brahmin family?
Student: Four fifty thousand.
Baba: Yes, yes. [There are] four fifty thousand with bodies and four fifty thousand who enter them. Are they not Brahmins? Don't they become Brahma's children? So, the number is nine hundred thousand who become deities perfect in 16 celestial degrees. What were they earlier? Before becoming deities, what were those souls? They were Brahmins. So, it is here that the 9 lakhs (900000), 16 thousand, 108 Brahmins get ready. Yes; so what were you asking about them? In Mount Abu...
Student: Do they live in Mt. Abu to become [the ones with] *kanchankaya* (deity-like bodies).

बाबा– कंचनकाया बनने के लिए माउन्ट आबू में नहीं रहते। माउन्ट आबू में रहते हैं अपनी आत्मा की परिष्करण करने के लिए। अकेले में रहकर के जो पुरूषार्थ किया जाता है, संसार के बीच में रहकर के जो पुरूषार्थ किया जाता है उसमें माया ज्यादा इन्टरफियर करती है और संगठित होकर के संगठन के अंदर रहकर के जो पुरूषार्थ किया जाता है उसमें माया उतना इन्टरफियर नहीं कर पाती है। तो अभी जो हम पुरूषार्थ कर रहे हैं, जिन बच्चों को बाबा ने चुना है वो बच्चे सन्यासमार्ग वाले हैं या प्रवृत्तिमार्ग वाले हैं? एड़वान्स में किन बच्चों को चुना है? प्रवृत्तिमार्ग वाले बच्चों को चुना है ना। तो प्रवृत्तिमार्ग वाले बच्चे अभी दुनिया में बिखरे हुए हैं या उनको संगठन मिल रहा है? बिखरे हुए हैं। इसलिए माया का असर उनके ऊपर ज्यादा होता है। ... तो जो बिखरी हुई आत्मायें हैं उनमें उतनी अभी शक्ति नहीं आ रही है। शक्ति कब आयेगी? ये नियम है संघौ शक्ति कलहयुगे, कलियुग में भगवान भी अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता, भगवान भी कुछ नहीं कर सकता। कौनसी शक्ति कार्य करेगी? संगठन की शक्ति कार्य करेगी। और संगठन जो होता है, युनिटी जो होती है वो प्योरिटी से ही आती है।
Baba: They do not live in Mt.Abu to have a *kanchankaya*. They live in Mt.Abu for the transformation of the soul. Maya interferes a lot in the *purusharth* (spiritual efforts) that you make while living alone, while living in the midst of the world and in the *purusharth* that you make while living collectively in a gathering, Maya is unable to interfere to that extent. So, the *purusharth* that we are making now, the children whom Baba has selected, do they belong to the path of *sanyas* (renunciation) or to the path of household? Which children has he selected to be part of the advance party? He has selected children who follow the path of household, hasn't He? So, are the children who follow the path of household scattered in the world or is there a gathering for them? They are scattered. This is why they are affected by Maya more. … So, the scattered souls are not getting much power now. When will they get

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

power? There is a rule '*Sanghau shakti kalahyugey*[3]' In *Kaliyug* (the Iron Age) even God cannot do anything alone. God cannot do anything [alone]. Which power will work? The power of the gathering will work. And gathering [or] unity comes from purity.

प्योरिटी लाने के लिए वैराग्य बहुत जरूरी है। क्या? मन–बुद्धि रूपी आत्मा जितनी–2 देह और देह के संबंधियों, देह के पदार्थों में रागवान होती जाती है, रागी, लिम्पायमान, उतनी ज्यादा बिगड़ती है, पतित बनती है और जितना मन–बुद्धि रूपी आत्मा विराग, वैरागी बनेगी, विपरीत रागवाली, विपरीत स्नेही, देह और देह के संबंध, देह के पदार्थों से जितनी ही दूर रहेगी, मन–बुद्धि रूपी आत्मा उतनी ही पवित्र बनेगी। अभी क्या हाल है? हम चाहते हैं, हर समय बाबा की याद रहे, फिर क्या होता है? बार–2 प्रयत्न करते हैं बाबा की याद रहे लेकिन रहती है? क्यों नहीं रहती? क्योंकि इस दुनिया का जो वायब्रेशन है, वो संगठित वायब्रेशन हमारे ऊपर पूरा असर कर रहा है; इसलिए वो वैराग की भावना जगेगी, दुनिया के चारों तरफ से थपेड़े लगेंगे, थू–3 दुनिया करे, दुनिया की ग्लानी सहन करनी पड़े तो दुनिया से वैराग आयेगा या राग आयेगा? दुनिया से वैराग आ जायेगा। क्यों वैराग आ जायेगा? कि अंदर से हम समझते हैं हम तो सच्चे रास्ते पर हैं फिर दुनिया भक्तिमार्ग के अंधविश्वास, अंधश्रद्धा के रास्तों पर चल रही है और हमको फिर भी ठुकरा रहे हैं। दुनियावी लोग दुनियावी बातों के आधार पर दुनिया को सपोर्ट कर के चल रहे हैं; भगवान को नहीं पहचान रहे हैं क्योंकि भगवान तो गुप्त है। भगवान कोई शरीरधारी तो है नहीं, भगवान भी हमारी तरह आत्मा ही तो है। उसको अपना शरीर नहीं होता और हमको अपना, हमको अपना शरीर है। तो लोग हमको तो पहचानते हैं लेकिन भगवान को पहचान नहीं सकते।

In order to bring purity, detachment is very necessary. What? The more our soul in the form of mind and intellect becomes attached (*ragvan, ragi, limpayaman*[4]) to the body and bodily relationships, in the things related to the body, the more degradation (*bigardti*) it undergoes, the more sinful it becomes and the more the soul in the form of mind and intellect becomes detached (*virag*, *vairagi*), the one which is opposite to attachment (*viparit ragvali*), the one which is opposite to love [for body and…] (*viparit* snehi); the more the soul in the form of mind and intellect remains far from the body, bodily relationships, and things related to the body, the more it will become pure. What is the condition now? We wish to remain in Baba's remembrance always, but then what happens? We make efforts again and again to remain in Baba's remembrance, but does it last (the remembrance of Baba)? Why doesn't it last? It is because the vibration of this world, that collective vibration is casting its full influence on us. This is why, when that feeling of detachment emerges; when we face the blows (thapeda) of the world from everywhere, when the world spits on us (shuns us) , when we have to tolerate the defamation brought about by the [people of the] world; then will we feel detachment for the world or will we feel attachment? We will feel detached from the world. Why will we feel detached? It is because we feel from within that we are following the true path, and the world is following the path of *bhakti*, the path of blind faith and still they disown us. The worldly people are supporting the world on the basis of worldly matters; they do not recognize God because God is hidden. God is not a bodily being. God is also a soul like us. He does not have a body of His own. And we have our own body. So, people recognize us but they cannot recognize God.

[3] there is power in a gathering in kaliyug

[4] synonyms which mean attached or emotionally involved

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

जब चारों तरफ से मार पड़ेगी, बौछार पड़ेगी तो उस दुनिया से वैराग आयेगा या नहीं आयेगा? आयेगा। इसलिए अव्यक्त वाणी में क्लीयर कर दिया – मधुबनवालों को मधुबन छोड़ना पड़ेगा, ज्ञानसरोवर वालों को ज्ञानसरोवर छोड़ना पड़ेगा और गीतापाठशाला वालों को गीतापाठशालायें छोड़नी पड़ेगी। ऐसी क्या बात हो जायेंगी? कुछ बात होगी ना? छोड़ने के लिए मजबूर हो जायेंगे। फिर ये दुनिया अच्छी लगेगी? अच्छी नहीं लगेगी। असली वैराग जब तक पैदा नहीं हुआ है तब तक ज्ञान भी पैदा नहीं होता असली। ज्ञान बोलना–बोलना, सुनाना–सुनना, समझना–समझाना – ये अलग बात होती है। वो रावण भी करता था। क्या? रावण को प्रकांड विद्वान कहा जाता था। शास्त्रों में कहा जाता है लेकिन कर्म कैसे थे? चोरी–चकारी–जबरदस्ती – ये रावण के कर्म थे। माना प्रैक्टिकल ज्ञान की धारणा नहीं थी। तो ऐसे ही है ज्ञान सुनना–सुनाना, ज्ञान को समझना–समझाना अलग बात है लेकिन प्रैक्टिकल जीवन में ज्ञान की धारणा दिखाई दे। वो तब होगी जब इस दुनिया से विराग आयेगा, वैराग आयेगा। देह, देह के संबंध, देह के पदार्थ उनसे विपरीत राग हो जाये – वि राग। उनसे प्यार खत्म हो जाये। अभी तो बुद्धि बार–2 उसी तरफ बुद्धि आकर्षित होती रहती है। भल ईश्वरीय ज्ञान कितना भी पक्का करता है कि ऐसा भी समय आयेगा कि कोई किसी के काम नहीं आयेगा। बाप–बाप नहीं रहेगा, बेटा–बेटा नहीं रहेगा, पत्नि–पत्नि नहीं रहेगी। ऐसे–2 स्वभाव–संस्कार की विपरीत चलनेवाली आत्मायें स्पष्ट नजर में आयेगी और एक–दूसरे से निभाए नहीं सकेंगे। ऐसे समय में भगवान ही नजर आयेगा एक। एक शिवबाबा दूसरा न कोई।

When we are attacked from all the directions, then will we become detached from the world or not? We will. This is why it has been made clear in the Avyakta Vani that the residents of *Madhuban* will have to leave *Madhuban*, the residents of *Gyan Sarovar* will have to leave *Gyan Sarovar* and the residents of *Gita pathshalas* will have to leave the *Gitapathshalas.* What will be the reason? There will be some reason or the other, won't there? They will be forced to leave [those places]; then will they like this world? They will not. Until true detachment has emerged, true knowledge does not emerge as well. Speaking knowledge, narrating and listening [to knowledge], explaining and understanding knowledge is a different thing. Even Ravan used to do that; what? Ravan was called a great scholar. It is said so in the scriptures; but how were his actions? Stealing and using force, these were the actions of Ravan. It means that there was no inculcation of knowledge in practical. So, similarly, listening, narrating, understanding and explaining knowledge is different, but the inculcation of knowledge in the practical life should be visible. That will happen when we become detached from this world. We should have detachment, opposite to attachment, from the body, the bodily relationships, things related to the body. There should be no more love for them. Now the intellect keeps getting attracted to them again and again. Although knowledge of God says strongly that there will be a time when nobody will prove useful for anyone. The father will not remain a father, the son will not remain a son, the wife will not remain a wife; souls which have opposite nature and *sanskars* will be clearly visible and they will not be able to maintain with each other. At such a time only one God will be visible to them. One Shivbaba and none else.

अभी हम सिर्फ मुख से कहते हैं, क्या? क्या कहते हैं? एक शिवबाबा दूसरा न कोई लेकिन प्रैक्टिकल जीवन में क्या नजर आता है लोगों को और हम भी क्या अनुभव करते हैं? हं? क्या अनुभव करते हैं? कि तन की शक्तियाँ, मन की शक्तियाँ, धन की शक्तियाँ जो भी हमारे पास मौजूद हैं, उन सबको त्याग कर के क्या हम भगवान के तरफ मुड़ गये हैं? मुड़ गये? नहीं मुड़ गये। एक वाक्य बोला हुआ है, बेहद के अर्थ भी है – मधुबनवालों को मधुबन छोड़ना पड़ेगा। हद का मधुबन भी है और फिर बेहद का मधुबन भी है। हद का मधुबन कौनसा है, हद के ब्राह्मणों के लिए वो कौनसा है? माउन्ट आबू। उनको वो छोड़ना पड़ेगा

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

और बेहद का मधुबन कौनसा है? बेहद का मधुबन कौनसा है? जहाँ मधुसुदन कार्य कर रहा हो, जहाँ बेहद की मिठास वृत्ति हो और बेहद की वैराग वृत्ति हो; वो बेहद का मधुबन। उस मधुबन में जो वास करनेवाले हैं चाहे हद का हो, चाहे बेहद का हो उनको मधुबन छोड़ना पड़ेगा।

Now we just utter through our mouth; what? What do we say? One Shivbaba and none else; but what do people see in practical life and what do we ourselves also feel? What do we experience? Have we renounced the powers of the body, the powers of the mind, the powers of wealth that we possess and have we turned towards God? Have we turned [towards God]? We haven't. A sentence has been spoken, it is also in the unlimited sense, 'The residents of Madhuban will have to leave Madhuban. There is a Madhuban in a limited sense as well as a Madhuban in an unlimited sense'. Which is a Madhuban in a limited sense for the Brahmins in a limited sense? Which is it? Mount Abu. They will have to leave that one and which is the unlimited Madhuban? Which is the Madhuban in an unlimited sense? It is a place where Madhusudan is working and a place where there is sweetness in an unlimited sense and detachment in an unlimited sense. That is Madhuban in an unlimited sense. Those who live in that Madhuban, whether in a limited sense or in an unlimited sense will have to leave Madhuban.

ऐसे ही ज्ञानसरोवर। एक हद का ज्ञानसरोवर भी है वो कहाँ है? माउन्ट आबू में। ईंटों का बनाए दिया है वहाँ ज्ञान है? ज्ञान है कि नाम ही रख दिया है ज्ञानसरोवर? सिर्फ नाम रखा हुआ है। वो हद का हुआ और बेहद का ज्ञानसरोवर जिनकी बुद्धि में ज्ञान का मनन–चिंतन–मंथन चलता रहता है और आपस में संगठित भी है नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार । वो ज्ञान का सरोवर। मनन–चिंतन–मंथन की ऊँची स्टेज में रहनेवाली आत्मायें, नम्बरवार देह और देह के दुनिया से परे है। लेकिन हैं नम्बरवार। तो बेहद के ज्ञानसरोवर वाले हैं उनको वो छोड़ना पड़ेगा। हो गया ज्ञान जितना था। क्या रह जायेगा सिर्फ? एक शिवबाबा दूसरा न कोई। तब ट्रंक कॉल आयेगा – चलो। जैसे यज्ञ के आदि में भी ट्रंक कॉल आया था। हिन्दूस्तान–पाकिस्तान का बँटवारा हुआ था और सात–2 तालों के अंदर आत्माओं को रखा गया था, उस समय बहुतों को ट्रंक कॉल आया। वो इधर–उधर बिखर के नहीं भाग गये। कहाँ पहुँच गये? ठिकाने पर पहुँच गये। और, नौ लाख ही ठिकाने पहुँचेंगे या कम–ज्यादा ठिकाने पे पहुँचेंगे? 16000 ही पहुँचेंगे? आपका प्रश्न यही था ना? कितने पहुँचेंगे?

Similar is the case with *Gyan Sarovar*. There is a *Gyan Sarovar* in a limited sense also; where is it situated? At Mt. Abu. It has been built with bricks. Is there knowledge there? Is there knowledge there or have they just named it *Gyan Sarovar*? They have just named it so. That is in a limited sense and what about the *Gyan Sarovar* in an unlimited sense? The ones whose intellect keeps thinking and churning about knowledge and are united with each other *numberwise* according to their *purusharth* constitute *Gyan Sarovar* (lake of knowledge). The souls which live in a high stage of thinking and churning; they are detached from the body and bodily relationships but *numberwise*; so those who are living in the *Gyan Sarovar* in an unlimited sense will have to leave it. They will leave the knowledge that they have. What will remain? One Shivbaba and none else. Then the trunk call will come: let's go (*calo*). For example, even in the beginning of the *yagya* a trunk call was given. Hindustan and Pakistan were formed and souls were kept under seven locks. At that time many people got a trunk call. They did not run away here and there. Where did they reach? They reached the destination. And will just nine hundred thousand reach the destination or will lesser or more number of souls reach the destination? Will only 16000 reach? This was your question, was it not? How many will reach [there]?

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

समय – 26.40 – 33.55
बाबा– पढ़ाई, राजयोग की पढ़ाई पढ़नेवाले, सहज राजयोग सीखनेवाले, जो गीता ज्ञान में सहज राजयोग सिखाया गया है, वो सीखने वाले कितने है?
जिज्ञासु– 9 लाख।
बाबा– 9 लाख? राजयोग सीखनेवाले? वो राजयोग सीखनेवाले राजघराने में जन्म लेते है? 9 लाख? (सबने कहा – 16108।) हाँ, वो जन्म–जन्मांतर जो राजाओं की लिस्ट बनी है हिस्ट्री में, उनकी संख्या ही है 16108। वो 16108 आत्माओं का तो निश्चित ही है। क्या? उनको ठिकाना तो मिलेगा ही, लेकिन बाकी? बाकी जो प्रजा वर्ग में जानेवाले हैं, वो नहीं पहुँचेंगी?
जिज्ञासु– एक जन्म का भी राजाई नहीं मिलती है?
Baba: How many are there who study, who study the teaching of Rajyog, who study easy Rajyog, [who study] the easy Rajyog that is taught in the knowledge of the Gita.
Student: 9 hundred thousand.
Baba: 9 hundred thousand? The ones who learn Rajyog? Are they born in the Royal family [of the ones] who learn Rajyog? The nine hundred thousand? (Everyone said: 16108) Yes. The list of kings of many births that is in history…, their number is only 16108. It is definite about those 16108 souls… what? They will certainly get their destination, but what about the rest? The rest, who will go into the category of subjects, will they not reach [there]?
Student: Will they not get kingship even for one birth?

बाबा– प्रजा वर्ग को कहाँ राजाई मिलती है? जिन्होंने राजयोग सीखा होगा वो ही राजायें बनेंगे। जिन्होंने राजयोग भगवान बाप से सीखा नहीं वो राजायें कैसे बनेंगे? दुनिया में कोई ऐसा हिस्ट्री में ऐसा स्कूल, कॉलेज खुला है जहाँ राजाई की शिक्षा दी जाती हो? जब शिक्षा ही नहीं दी गई हिस्ट्री में तो राजायें कैसे बनेंगे? डॉक्टर बनने की शिक्षा दी जा रही है, मास्टर बनने की शिक्षा दी जा रही है, इंजिनियर बनने की शिक्षा दी जा रही है, मेकेनिक बनने की शिक्षा दी जा रही है। राजा बनने की शिक्षा कहीं किसी ने नहीं दी। वो तो गीता में गायन है कि भगवान जब आये तो उन्होंने राजयोग सिखाया और राजयोग से राजाई की शिक्षा दी। वो राजाई सिवाय भगवान बाप के और आत्माओं में वो संस्कार कोई भरता ही नहीं। नहीं तो हिस्ट्री में इतने बड़े–बड़े, छोटे–छोटे राजायें हुए, इनको राजाई करना किसने सिखाया? कब सिखाया? किसी ने तो सिखाया होगा।
Baba: Where do subject category get kingship? Only those who have learnt Rajyog will become kings. Those who did not learn Rajyog from God the Father, how will they become kings? Has a school or college opened in the world-[recorded] in history-where the teaching of kingship is given? When the teaching was not at all given, in history, then how will they become kings? The teaching is being given to become a *doctor*, the teaching is being given to become a *master*(teacher), the teaching is being given to become an *engineer,* the teaching is being given to become a *mechanic*. Nobody anywhere taught the teaching to become a king. In fact, it is praised in the Gita that when God came He taught Rajyog and through Rajyog he gave the teaching of kingship. That kingship… except for God the Father, no one else fills these sanskars in the other souls. If it were not so, there have been so many great, so many small kings in history, who taught them to rule? When did they teach? Someone would have certainly taught [them].

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

वो लौकिक बाप होते है, उनका हद का वर्सा होता है, लौकिक टीचर होते है, उनका हद का वर्सा होता है, गुरू होते है उनकी हद की प्राप्ति होती है और ये तो बेहद का बाप है, सुप्रीम सोल। बेहद का टीचर है, सुप्रीम टीचर। उसको पढ़ाई पढ़ाने वाला कोई है ही नहीं दुनिया में। वो सबको पढ़ाई पढ़ावेगा लेकिन उसको कोई नहीं समझाय सकता। क्या? समझाय सकता है? बेसिक नॉलेज में भी, है तो बड़े–बड़े, समझे जाते है विद्वान है, एडवांस नॉलेज में भी बड़े–बड़े होशियार है। ढ़ेर सारी पार्टियाँ निकाल करके बैठे है, मुकाबला कर रहे है, लेकिन इतनी किसी मे दम है कि आमने–सामने बैठ करके समझाये, पढ़ाई पढ़ायें? अरे! ये भी एक पहचान है भगवान बाप की; क्या? कि वो सबको पढ़ाई पढ़ानेवाला है आगे–पीछे, आज नहीं तो कल, लेकिन उसको कोई पढ़ाई पढ़ाय नहीं सकता। कितने पहुँचेंगे माऊंट आबू में? यहीं आपका प्रश्न था ना? कितने पहुँचेंगे?

There are those worldly (*lokik*) fathers, they have a limited inheritance. There are *lokik* teachers, they have a limited inheritance. There are Gurus; they have limited attainments, whereas this one is the unlimited Father, the Supreme Soul. He is the unlimited teacher, the Supreme Teacher. There is no one who teaches Him in the world. He will teach the teaching to everyone but no one can explain [anything] to Him. What? Can anyone explain to Him? Even in basic knowledge, there are great [ones], they are considered to be scholars. In the Advance knowledge also, there are highly intelligent ones. They have come up with so many parties (different groups of their followers), they are confronting [the Father], nevertheless does anyone have so much power that they would sit face to face [with the Father] and explain to Him, teach Him [their] teaching? This is also an identification of God the Father, what? … that He is going to teach the teaching to everyone, now or later; if not today, tomorrow; but nobody can teach Him the teaching. How many will reach Mount Abu? This was your question, wasn't it? How many will reach [there]?

जिज्ञासु– पूरे 4.5 लाख।
बाबा– आपके पास ही बैठे है, वो कह रहे है 16108। आप कह रहे है 9 लाख। ये क्या बात हो गई? वो कह रहे है राजयोग सीखनेवाले ही वहाँ पहुँचेंगे। आप कह रहे है नहीं प्रजा वर्ग की आत्मायें भी पहुँचेंगी।
जिज्ञासु– फिर कैसे कंचन काया बनेगी?
बाबा– आप क्या आर्य समाजी है? प्रजा परस्त तो नहीं है? वोट तो नहीं इकट्ठे कर रहे है ढ़ेर के ढ़ेर?
जिज्ञासु– पूरा 4.5 लाख कंचन काया बनेगी ना।
Student: The entire four fifty thousand.
Baba: The one who is sitting next to you, he is saying 16108. You are saying nine hundred thousand. What is the matter? He is saying that only those who learn Rajyog will reach there. You are saying, no, the subject category souls will also reach [there].
Student: Then, how will they have a *kancankaya* (rejuvenated body)?
Baba: Are you an *Aryasamaji*? Are you devoted to subjects? Are you collecting lots and lots of votes?
Student: The entire four fifty thousand will have a *kancankaya,* will they not?

बाबा– 4.5 लाख तो शरीरधारी होंगे जो नयी सृष्टी को जन्म देनेवाले हैं। और 4.5 लाख जन्म लेनेवाले होंगे। वो स्थूल पेट से, गर्भ से जन्म लेंगे। टोटल मिलाके 9 लाख आत्मायें हैं जो 9 लाख सितारें आसमान में गाये जाते हैं। सारी दुनिया में जब पूरे जोश से अंधेरा हो जाएगा, अंधकार ही अंधकार होगा, उस समय वो 9 लाख आत्मायें रोशनी मारेंगी, रोशनी फेकेंगी ईश्वरीय, ज्ञान सूर्य की रोशनी चारों तरफ फेकेंगी। बाकी साढ़े 500 करोड़, 700 करोड़ सब अंधकार में होंगे। वो 9 लाख हैं ज्ञान सूर्य की किरणें। है सभी 16 कला संपूर्ण,

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

बननेवाले। अब प्रश्न आपका तो ये है कि माऊंट आबू में कितने लोग जायेंगे? दो पार्टियों में किसको विजयी बनाओगे भाई? (किसी ने कहा – 4.5 लाख।) एक पार्टी सबको ले जाना चाहती है, एक पार्टी कहती है, नहीं। जो राजयोग सीखनेवाले हैं वो ही जायेंगे। जो राजा–रानी बननेवाली आत्मायें हैं, वो ही जानी चाहिए। प्रजा वर्ग की आत्माओं को नहीं जाना चाहिए।

Baba: Four fifty thousand will be with their body (*sharirdhari*); they are the ones who will give birth to the new creation, and four fifty thousand are those who will be born. They will be born through a physical stomach, a womb. Totally there are nine hundred thousand souls who are praised as the nine hundred thousand stars in the sky. When there will be darkness in full force in the entire world, when there will be nothing but darkness, then those nine hundred thousand souls will shine their light, they will spread the light of God, they will spread the light of the Sun of knowledge in all the four directions. The rest, 5.5 billion, 7 billion will be in darkness. Those nine hundred thousand are the rays of the Sun of knowledge. All of them are the ones who will become complete with sixteen celestial degrees. Now, your question is how many will go to Mount Abu. Brother, whom will you make victorious between the two parties? (Someone said: four fifty thousand) One party wants to take everybody [to Mount Abu], the other party says, 'no, only those who learn Rajyog will go there. Only those souls who will become kings or queens should go. The souls belonging to the subject category should not go.

जिज्ञासु– 4.5 लाख नम्बरवार जायेंगे।

बाबा– नहीं, माऊंट आबू में जाकर कितने ठिकाना लेंगे? इनका प्रश्न ये है कि माऊंट आबू में जाकर कितने ठिकाना लेंगे? कितने वहाँ जाकर के संगठित याद में बैठेंगे, तपस्या करेंगे? कितने बैठ करके अपनी आत्मा को कंचन बनायेंगे? शरीर तो कंचन बननेवाले है नहीं जब तक टोटल विनाश दुनिया का न हो। अरे, किसको वोट देंगे? अभी तो प्रजातंत्र राज्य चल रहा है। अभी कोई राजा का राज्य तो नहीं चल रहा है। अच्छा गोपी भाई को वोट देनेवाले कितने लोग हैं? गोपी भाई कहते है कि 16000 जाने चाहिए और रामचंद्र भाई कहते है 16000 नहीं, 9 लाख भी जाने चाहिए। राजा वर्ग की और प्रजा वर्ग की सभी आत्मायें जानी चाहिए। गोपी भाई को वोट कौन–कौन दे रहा है? 2, 3, एक दूसरे को देख–देख कर के हाथ उठा रहे है। 4, 5, 6, 7, 8, 9। चलो 9 तो निकले। अच्छा, और बाकी रामचंद्र भाई को सारे वोट दे रहे है? ये मान लिया? अच्छा हाथ उठाओ तब माने। रामचंद्र भाई को वोट कौन–कौन दे रहा है?

Student: Four fifty thousand will go according to their capacity (*number wise*).

Baba: No, how many will go and take shelter in Mount Abu? His question is, how many will go and take shelter in Mount Abu? How many will go there and sit collectively in remembrance, [and] will perform *tapasya?* How many will sit and make their body *kancan* (rejuvenated). Until the world is totally destroyed the bodies are not going to become *kancan*. Arey! Whom will you give your vote to? Now democratic rule is being followed. Now king's rule is not going on. Accha, how many will vote for brother Gopi? Gopi *bhai* says that 16000 should go [to Mount Abu] and Ramachandra *bhai* says not 16000, 900000 also should go. All the souls from the king category and the subject category should go. Who are voting for Gopi *bhai*? Two, three… you are raising your hands looking at one another. Four, five, six, seven, eight, nine. Ok, at least nine have come up. *Accha*, are all the rest of you voting for Ramachandra *bhai?* Do you agree? *Accha*, raise your hands, only then we can believe. Who are voting for Ramachandra *bhai*?

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

समय – 33.55–44.35
जिज्ञासु– 4.5 तो होगा ना बाबा?
बाबा– जब 4.5 जायेंगे तो उनमें प्रवेश करनेवाले नहीं जायेंगे वहाँ? वो क्या उपर बैठ जायेंगे? अरे, वहाँ स्थूल पेट से जन्म लेंगे तो यहाँ तो बुध्दिरूपी पेट में रहेंगे ना। वो छोड़ देंगे क्या? रामचंद्र भाई कह रहे है, नहीं, 9 लाख जाने चाहिए माऊंट आबू में। हाथ उठाओ, कितने–कितने हाथ उठा रहे हैं? एक। माना बाकी फैसला ही नहीं कर पा रहे हैं।
जिज्ञासु– नहीं, बाबा जो बोलेंगे वो...
Student: There will be four fifty thousand, won't there Baba?
Baba: When four fifty thousand go, will the ones who will enter them not go there? Will they sit above? Arey, when they will be born from the physical womb there, here, they will stay in the womb in the form of intellect, won't they? Will you leave them out? Ramachandra *bhai* is saying, 'no, nine hundred thousand must go to Mount Abu'. Raise your hands, how many are raising your hand? One. That means the rest are not able to make a decision at all.
Student: No, whatever Baba says, that…

बाबा– ये कोई बात नहीं, ये तो भक्तों की बात हो गयी। भक्तबुध्दि थोड़े ही बाबा बनाते है। फैसला करो, राईट क्या है, रांग क्या है। ये तो फिर वो बात हो गयी जैसे दुनिया में भक्त लोग करते है, जैसे सब चलेंगे वैसे हम चलेंगे। अच्छा, अव्यकत वाणी में बाबा ने ये बोला हुआ है, तुम्हारा पूरा का पूरा परिवार ज्ञान में चलेगा। बोला है कि नहीं बोला? परिवार के जो भी भांति हैं वो सब ज्ञान में चलेंगे। किसके लिए बोला? बी.के वालों को बोला की पी.बी. के वालों को बोला? (सबने कहा – पी.बी.के।) जो एडवांस में है, उनके लिए स्पेशल बात बोली गयी है, तुम्हारा पूरा का पूरा परिवार ज्ञान में चलेगा। क्या मतलब हुआ? ज्ञान में चलेगा का मतलब क्या हुआ? वो परिवार के भांति बनेंगे या नहीं बनेंगे? जो भी राजयोग सीखनेवाले हैं उन 16000 राजयोगियों के घर के भांति बनेंगे या नहीं बनेंगे? यथा राजा तथा प्रजा की लिस्ट में आवेंगे या नहीं आवेंगे? आवेंगे। जब भांति बन गये परिवार के तो नाँव उठ रही है, लंगर उठ रहा है, जहाज जा रहा है पार; ये दुनिया है विषयसागर और विषयसागर से पार क्षीरसागर में जहाज जा रहा है, तो अपने भांतियों को कोई छोड़ देता है क्या? या भांति पल्ला छोड़ देंगे?
Baba: This is not any reply; this is something the devotees do. Baba does not make [you the ones with] devotee intellects. Make a decision, what is right, what is wrong. This is like what the devotees in the world do, 'whatever everyone else does, we will follow the same'. Accha, Baba has said in the Avyakt Vani, your entire family will follow [this] knowledge. Has he said or not? (Everyone said: he has said.) All the members of the family will follow the knowledge. For whom was it said? Was it said for the BKs or for the PBKs? (Everyone said: for PBKs.) It has been said especially for the ones in Advance [knowledge]: your entire family will follow the knowledge. What does it mean? What does it mean by 'will follow the knowledge'? Will they become the members of [this] family or not? Will they become the members of the family of the 16000 Rajyogis who learn Rajyog or not? Will they come in the list of 'as the king so the subjects' or not? They will. When they have become members of the family; then the boat is leaving, the anchor is being released, the ship is going across; this world is the ocean of vices and the ship is going across the ocean of vices into the ocean of milk, then does anyone leave out his [family] members? Or will the [family] members let go off their support?

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

छोड़ देंगे? (किसी ने कहा – नहीं छोड़ना है।) हाँ, बी.के वाले, वो भांति नहीं कहेंगे। परिवार के सदस्य नहीं कहेंगे। क्यों? (किसी ने कहा – बाप को पहचाना नहीं।) हाँ, एक तो पहचाना नहीं। पहचाना, तो यहाँ लौकिक संबंधियों ने भी नहीं पहचाना। जो एडवांस के ज्ञान में चलनेवाले लौकिक परिवार के सदस्य हैं, वो पहचान रहे हैं? वो भी नहीं पहचान रहे है। विरोध कर रहे हैं लगातार। लेकिन विरोध करने के सक्रिय बावजूद भी घर में से कान पकड़ के बाहर तो नहीं निकाल रहे है। घर के अंदर रखा हुआ है कि नहीं रखा हुआ है? बोलो। (किसी ने कहा – रखा हुआ है।) और वो जो अलौकिक परिवार, ब्राह्मण परिवार वाले, वो क्या कर रहे है? यहाँ जितने बैठे हुए है उन सबको कान पकड़के बाहर कर देते है। या तो फिर सेवा ही न करो। उनके सामने ईश्वरीय करोगे, 'निकलो 1, 2, 3। गेट आऊट।'

Will they let go? (Someone said: we should not let go?) Yes, the BKs, we cannot call them [family] members. We will not call them family members. Why? (Someone said: they have not recognized the Father.) Yes, one thing is that they have not recognized. The *lokik* relatives here have not recognized either. The members of the *lokik* family of those who are following the Advance knowledge; are they recognizing? They are not recognizing either. They are continuously opposing [the Father]. Nevertheless, in spite of actively opposing they are not catching your ears and throwing you out of the house. Have they let you stay in the house or not? Speak? (Someone said: they have let us stay.) And what are those, the ones of the *alokik* family, the Brahmin family doing? All those who are sitting here, they catch their ears and throw them out. Or else do no service at all. If you do service of God in front of them, 'get out, one two three, *get out'*.

तो जिनमें इतनी ही सहनशक्ति नहीं है, वो देवता कैसे बनेंगे? अपने घर–परिवार वालों को भी सहन करने की शक्ति नहीं है, देखने की शक्ति नहीं है, उनकी बात सुनने की शक्ति नहीं है, उनके साथ बैठ के खाना, सोना, उन्हें अंदर ये इतनी सहनशीलता ही नहीं है। उनको सहनशील देवता कहेंगे? देवताओं का मुख्य गुण कौनसा है? सहनशीलता। तो इससे साबित हो जाता है, वो तो विधर्म में कनवर्ट होनेवाली आत्मायें हैं। दूसरे धर्मों में कनवर्ट हो जायेंगी जन्म–जन्मांतर, द्वापरयुग से 63 जन्मों में। ये कनवर्ट होनेवाले भारतवासी आत्मायें हैं जिन्होंने भारत को धोखा दिया है दुसरे धर्मों में कनवर्ट हो–हो करके। और जो सहन करनेवाले है, भले विरोध करनेवाले हैं, वाचा से विरोध कर रहे है, दिल से विरोध? दिल से विरोध कर रहे हैं? दिल से विरोध नहीं कर रहे हैं। तो वो हमारे अपने हैं। इसलिए वो माऊंट आबू मे नहीं जाने चाहिए। हं? क्यों? जब दुनिया में धुँआधार एटम बमों का विनाश हो रहा हो, उस समय उनको शेल्टर नहीं मिलना चाहिए भगवान का? बताओ कौन–कौन कहेगा शेल्टर नहीं मिलना चाहिए। उठाओ गोपी भाई हाथ।

So, how will those who do not have even this much tolerance become deities? They do not have the power to tolerate even the members of the house and family, they do not have the power to see them, they do not have the power to listen to their words, to sit with them and eat, to sleep, they don't have this much tolerance at all. Can we call them tolerant deities? Which is the main virtue of deities? Tolerance. This proves that they are the souls who are certainly going to convert to *vidharm* (religion opposite to the Father's religion). They will convert to the other religions, birth after birth, since the Copper Age in their 63 births. These are the *Bharatvasi* souls, who are going to convert, who have deceived Bharat by converting into the other religions. And those who are tolerating, although they are opposing, they are opposing through speech; through their heart? Are they opposing through their heart? They are not opposing through their hearts. So they are our own. So they mustn't go to Mount Abu, hum? Why? When the smoky destruction through atom bombs is going on in the world, should they not get the shelter of God at that time? Speak, how many will say that they should not get shelter. Gopi *bhai*, raise your hand!

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

जिज्ञासु– वो बाद में पहुँचेंगे।
बाबा– चलो बाद में पहुँचे, पहले पहुँचे। सुबह का भूला शाम को अगर घर आ जाए तो भूला हुआ कहाता है? कहते है, सुबह का भूला हुआ और शाम को घर पहुँच जाए, तो उसको कहेंगे भूला हुआ? नहीं। गलती को सुधार लिया तो भूला हुआ काहे का? जब दुनिया में भगवान के प्रत्यक्षता की आवाज निकलेगी, तो उस आवाज को जो लौकिक घर के भांति है... अखबारों में आवाज निकलेगी, टीं.वी. में आवाज निकलेगी, रेडिओ में आवाज निकलेगी, घर–परिवार में, मुहल्ले–मुहल्ले में वो ही बातें चल रही होंगी, घर–घर में वो ही सत्यनारायण की कथा हो रही होगी। ये कथा तो यादगार है भक्तिमार्ग की लेकिन प्रैक्टिकल में भी तो कभी कथा हुई होगी सच्ची। एक की ही सच्ची कथा है, एक ही दुनिया में पूरा सच होता है, 100 पर्सेंट। बाकी सत्य लक्ष्मी की भी कथा नहीं है। क्या? वो भी कुछ न कुछ ज्ञान का विरोध करती है, सत्य का विरोध करती है। इसलिए उसकी भी कथा नहीं है। तो जो एक सच्चा और बाकी सारी दुनिया झूठी, तो सच्चे को मुकाबला तो करना पड़ता है झूठों के साथ। तो उसकी कथा घर–घर में नहीं गायी जाती? जरूर गायी जाती है। ऐसा जब समय आवेगा, उस समय जो घर के भांति होंगे, वो भगवान बाप को नहीं मानेंगे? मानेंगे। और ही खुश होंगे कि देखो हमारे परिवार के अंदर ऐसा खून भी है जो भगवान बाप के इतने नजदीक है।
Student: They will reach later.
Baba: Alright, whether they reach later, whether they reach first. If the one who forgets (goes astray) in the morning and comes home in the evening, will he be called 'the one who has gone astray'? They say, the one who has gone astray in the morning and comes back home in the evening. Will he be called the one who has gone astray? No. If he has corrected his mistake, how is he the one who has gone astray? When the voice of revelation of the God will raise in the world, then that revelation… the members of the *lokik* home… voice will come in newspapers, voice will rise in TV, voice will rise through radio, the same topic will be raised in the household and family, in every colony, the same story of *Satyanarayan* will be going on in every house. This story is a memorial of the path of *bhakti* but the true story would have also happened in *practical* sometime. There is the true story of only one, only one is completely true in the world, cent percent [true]. As for the rest, there is not even the story of true Laxmi. What? She too opposes the knowledge to some extent or the other, she opposes the truth. Therefore there is no [true] story of her too. So the one who is true and all the rest of the world is false…, so the true one certainly will have to confront the false ones. So is his story not sung in every house? It is certainly sung. When such a time comes, at that time the members of family, will they not accept God the Father? They will accept. Moreover, they will be happy, 'look, there is one such blood [relative] inside our family who is so close to God the Father.

इसलिए मुरली में बोला है, माऊंट आबू जो है, सारा माऊंट आबू खरीद करना पड़ेगा। क्या? अभी जो बी.के. हैं वो तो अंश मात्र पर भी नहीं रह रहे हैं। क्या होगा? वो ऐसा तीर्थ स्थान है दुनिया का जिसकी महीमा तुम बच्चों ने जानी हैं। सारी दुनिया नहीं जानेगी। न उस जमीन की कीमत लगायेगी। वो बैंको में जमा करते रहेंगे, पोस्ट ऑफीस में जमा करते रहेंगे। क्या? कम्पनियों में पैसा लगाते रहेंगे, बड़े–बड़े धंधे–धोरियों में पैसा लगाते रहेंगे, बड़ी–बड़ी मल्टीमिलयानेर मिलें बनाने में पैसा लगाते रहेंगे, मल्टीस्टोरी बनाने में पैसा लगाते रहेंगे। माऊंट आबू का उनको महत्व बुध्दि में नहीं बैठेगा।

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Therefore, it was said in Murli, the Mount Abu, the entire Mount Abu will have to be purchased. What? Now the BKs are not staying on even a part of it. What will happen? That is such a pilgrimage place of the world whose greatness you children have come to know. The entire world will not know. They will not make an offer [to purchase it] either? They will continue to deposit in the banks, they will continue to deposit in the post offices. What? They will invest their money in the companies, they will invest their money in big businesses, they will invest their money in preparing mills worth multimillions, they will invest their money in making multistory buildings. The importance of Mount Abu will not sit in their intellect.

तो सारा माऊंट आबू खरीद करने की बात बाबा ने क्यों की? कोई कारण होगा। क्या कारण? (किसी ने कहा – बच्चों के लिए) हाँ, 9 लाख आत्माओं को रहने के लिए स्थान तो चाहिए ना। स्थान भी चाहिए, फिर उनको खाने–पीने के लिए कुछ तो चाहिए भले योगियों की भूख कम हो जाती है, फिर भी तो कुछ चाहिए ना। इसलिए बोला, तुम बच्चे यहाँ माऊंट आबू में बैठे–बैठे टी.वी. में सारा देखते रहेंगे दुनिया में कैसे विनाश हो रहा है। एटम बम्ब फटते रहेंगे, एक–एक शहर करके बरबाद होते रहेंगे और तुम टी.वी. में बैठे–बैठे देखते रहेंगे।

So why did Baba talk about purchasing the whole Mount Abu. There must be some reason. What is the reason? (Someone said: for the children). Yes, the nine hundred thousand souls need a place of residence, don't they? They need a place, then they also need something to eat and drink. Although the *yogis'* hunger decreases, they need something, don't they? That is why it was said, you children will sit here in Mount Abu and watch everything on TV, how destruction is taking place in the world. Atom bombs will be exploding, cities will be destroyed one after the other and you will be sitting and watching it on TV.

……

Note: The words in italics are Hindi words. Some words have been added in the brackets by the translator for better understanding of the translation.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info